International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-6
December- 2014
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

प्रेमचन्दोत्तर प्रमुख उपन्यासों में यथार्थ – दृष्टि टेढ़े–मेढ़े रास्ते (भगवती चरण वर्मा), सन् 1940 ई0–

Anita Sharma
Research Scholar
Mewar University
Rajasthan

प्रस्तावना

हिन्दी के अधिकांश उपन्यासों में, जिनमें भारतीय स्वाधीनता का इतिहास अभिव्यक्त हुआ है, अंहिसा का ही प्रतिपादन करता है। यह उपन्यास इसका प्रमाण है। इस उपन्यास का आतंकवादी पात्र मनमोहन अपने साथी को आतंकवाद के इस मार्ग से हट जाने की सलाह देता है।

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र मार्कण्डेय गाँधी–विचार धारा का अनुयायी है और देशहित हेतु हर प्रकार की कष्ट सहने के लिए तैयार है। वह अपने पिता से स्पष्ट शब्दो में कहता है – 6 ''तो फिर आपने मुझे वकालत क्यों पढ़ाई ? हमारे कुल में कभी किसी ने अंग्रेजी नहीं पढ़ी थी और वकालत नहीं पढ़ थी। मुझे भी आप देहात में ही रखते, अज्ञान का जीवन व्यतीत करने देते, पशु की मौत मर जाने देते। अगर मैं जेल जाना चाहता हूँ तो चोरी करके नहीं, डाका डालकर नहीं, बल्कि अपनी आत्मा से प्रेरित होकर, देश और समाज के हित के लिए।''

''टेढ़े–मेढ़े रास्ते'' में क्रांतिकारी आनदोलन का भी चित्रण है। क्रान्तिकारी आन्दोलन का मुख्य केन्द्र कलकत्ता था। प्रभानाथ को क्रांति की प्रेरणा कलकत्ते में वीणा मुखर्जी, जो क्रांतिकारी दल की सदस्या हैं, से मिलती है। प्रभानाथ पुलिस सुपरिण्टेण्डेंट के हाथों स्त्रियों को पिटते हुए देखता है ओर उसके मुख से भारतीयों के प्रति अपमानजनक बातें भी सुनता है अतएव वह क्रांतिकारी बन जाता है और वह सभी प्रकार से क्रांतिदल को समर्थन देने का निश्चय कर लेता है। वह क्रान्ति की योजना बनाकर वीणा को ''कौशल्या बालिका विद्यालय'' के प्रधानाध्यापिका पद को स्वीकार करने के लिए आमंत्रित करता है। विख्यात क्रांतिकारी प्रभाकर मनमोहन के रूप में नाम और भेष बदलकर देश के प्रत्येक भाग का दौरा करता है और क्रांति का संगठन करता है। अन्त में वीणा प्रभनाथ को पोटैशियम साइनाइड दे देती है जिसे खाकर प्रभानाथ का प्रणानत हो जाता है और उसके बाद वीणा भी स्वयं गोली मार लेती है।

इस उपन्यास में आधुनिक शिक्षा की असलियत पर प्रभावशाली शब्दों में अपने विचार मार्कण्डेय के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं। मार्कण्डेय ब्रह्मदत्त को कहता है, ''हाँ! तुम हिन्दुस्तानी जरूर हों, क्योंकि तुम्हारा जनम हिन्दुस्तान में हुआ है और तुम्हारी शिक्षा–दीक्षा भी हिन्दुस्तान में ही हुई है, जो विदेशी विचार धारा का अध्ययन कर रहे हैं और अब अपने को उस विदेशी विचारधारा में पूरी तौर से खो चुके हैं। धन और उत्पीड़न को सत्य माननेवाली आज की हिंसात्वक विचारधारा हिन्दुस्तान की नहीं है। आज तुम अपनी दया, त्याग, ममता, भावना की संस्कृति को छोड़कर जीवन के कुरूप और हिंसात्मक संघर्ष को अपना सत्य मान बैठे हो।''

इस उपन्यास में महालक्ष्मी भी ऐसी नारी है जो अपने पति के अत्याचारों को सहती है। उसके प्रेम–संबंध को स्वीकार करती हुई कहती हैं– ''मुझे उसमें सुख है जिसमें आपको सुख है। आप सुखी रहें, आप अच्छे रहूं। आज जब वह पूछे कि मैं कौन हूँ, तब दें कि मैं नौकरानी हूँ और मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मै उनकी सेवा करूँगी, उनकी पूजा करूँगी।''

निमन्त्रण (भगवती प्रसाद वाजपेयी), सन् 1942 ई0

'' निमन्त्रण'' उपन्यास में भगवती प्रसाद वाजपेयी ने गिरधारी शर्मा को द्वारा सत्याग्रह तथा देशोद्वारा के कार्यो पर प्रकाश डाला है। गांधीजी तथा मदन मोहन मालवीय ने देशवासियों का ध्यान भोग–विलास से हटाकर देश–सेवा की ओर लगाया है। गिरधारी शर्मा भी उन्हीं विचारों से प्रभावित हैं। इसी विचार से प्रभावित होकर मालती देश –कार्य की ओर मुड़ती है। उसका विलयती साड़ियों को छोड़कर खादी की साड़ी पहनाना, बहिष्कार आन्दोलन का प्रत्यक्ष प्रभाव है। विश्वनाथ सत्याग्रही बनकर हड़ताल का संचालन करता है, शर्माजी को कारागार में बन्द कर दिया जाता है, पर वे पत्र का सार, मालती और विनायक को दे जाते हैं, जैसे दाण्डी में गांधीजी के गिरफ्तार होते समय, सविनय–अवज्ञा–आंदोलन का भार सरोजनी नायडू को सौंप दिया गया था।[2]

गिरती दीवारें (उपेन्द्रनाथ अश्क), सन् 1947 ई0

इस उपन्यास में कथानायक चेतन मिन्म मध्यवर्गीय का प्रतिभाशाली युवक है। आज के निम्न मध्यवर्गीय युवक के समान चेतन के सामने भी जीवन की कोई दिशा स्पष्ट नहीं है। उसमें प्रतिभा तो है, पर वह यह नहीं सोच पाता कि उसे इस प्रतिभा का उपयोग किस प्रकार करना चाहिए और वह अपने जीवन का निर्माण सिक प्रकार कर सकता है फलस्वरूप वह एक भटकाव की स्थिति में आ जाता है और उसके जीवन में विश्रृंखलता

आ जाती है। इस उपन्यास का नायक–चेतन निम्न मध्य वर्ग की उन सारी प्रवृत्तियों को अपने में समेट कर एक ऐसे सशक्त यथार्थवादी नायक के रूप में उभरता हैख् जिसमे अश्का का अपना आरोपित कुछ भी नहीं है। वह जो कुछ करता या सोचता है, वह बहुत ही स्वाभाविक रूप में उसके व्यक्तित्व के साथ संगुफित है। उसे एक परिवेश में रखकर अश्क के जिस विराट कन्वस का यथार्थ चित्रण किया है, वह अन्यतम है। हिन्दी में ऐसा प्रथम बार ही हुआ है।

चेतन मध्यवर्ग आर्थिक विषमता का शिकार है। चेतन आर्थिक शोषण को देखता है। कविराम और हुनर साहब जैसे शोषकों के प्रति उसके मन में बेहद आक्रोश है किन्तु परिवार के धरातल पर भी उसका नपुंसक आक्रोश उसे दयनीय बना देता है। परिस्थितियों पर गौर करता हुआ वह सोचता है ''इतने क्लर्क, मजदूर, किसान ये सब घोड़े हैं, विभिन्न गाड़ियों में जुते घोड़े। अपने आराम और सुख की परवाह किये बिना पसीने से तर, थकान से चूर, दिन–रा काम किये जाते हैं। इसलिए कि उनके प्रभु सफलता की गाड़ियों में बैठे अपने ध्येय तक पहुँच जायें।'' कविराज का शोषण उसे खलता है। वह सोचता है ''अगर पेट भरने कीसमस्या सामने नहीं होती तो उसे समाचार–पत्रों की, कविराज जैसे शोषकों की गुलामी न करनी पड़ती।''

चेतन जीवन के प्रत्येक धरातल पर असंतुष्ट है, कुण्ठाग्रस्त है। चेतन के जीवन की ट्रेजेडी उसकी बढ़ी हुई भाव–प्रवणता और उससे उत्पन्न क्षोभ है। निम्न मध्यवर्ग में जो मोटी खाल पैदा होती है, जो मान–अपमान को सह जाती हैं और रिश्वत लेती है और धोखा, करती हैं, वह चेतन के पास न थीं। उसकी खाल बड़ी पतली थी।''

घरौंदे (रांगेय राघव्), सन् 1946 ई0

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र भगवती है। भगवती बहुत ही परिश्रमी, मेधावी पर निर्धन छात्र हैं। उसके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा आकर्षण है कि लड़कियां सहजा ही उसकी ओर आकर्षित हो जाती है। भगवती जीवन संघर्षों से प्रताड़ित व्यक्ति है। उसमें निर्भिकता, पुरूषार्थ, स्वावलम्बन एवं आत्मविश्वास की भावना प्रबल है, किन्तु धनाभाव के कारण वह दुखी रहता है। इस उपन्यास में भगवती के अतिरिक्त प्रो0 मिश्रा, कामेश्वर, वीरेश्वर, वीर सिंह नरसिंह, जमींदार, सर वृन्दावन, राजेन्द्र सिंह, मैक्सूअल, इन्द्रनाथ विनोद, कमल रहमान, सज्जार, पीटर, कालचरण, बिट्टन, मंगलराम, धीरेन्द्र कैप्टेन सेन, सुन्दरराम आदि प्रमुख पुरूष पात्र हैं। इनमें कामेश्वर का चरित्र केवल व्यक्तिगत का न होकर वर्ग का प्रतीक है। यह मध्यवर्गीय चरित्र है जिसे न तो राजनीति से कोई रूचि है न सामाजिक समस्याओं से। यह एम0ए0 का छात्र है। शराब पीना, वेश्यागमन आदि इसकी सामान्य आदते हैं। उसके अनुसार नारी एक–एक विलास है, किन्तु उसकी परवलता उसका सबसे बड़ा अधिकार है। वह किसी के अधिकार में नहीं रहना चाहती है। वे वेश्या नादानी के सम्पर्क में नहीं रहना चाहता हूे। वह वैश्या नादानी के सम्पर्क में आने पर सुधारने लगता है। उसके परिवर्तन से अधिक विकास को लेखक ने उपन्यास में वर्णित नहीं किया है।

''घेरौंदे'' की अवग आदि फैशन परस्त विलासिनी नायिकाएँ है। लवण फैशन और विलासिता में ही पागल रहती है, वह समाज की किसी भी मार्यादा को स्वीकार नही करती । यह कारण है कि विधवा होने के पश्चात् वह प्रो0 मिश्रा के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर लेती है। इस प्रकार अन्य नायिकाएँ भी भौतिक अकार्षणों के प्रति समर्पित हैं। वेश्याओं से कुछ मिलती जुलती नर्तकियाँ हैं। इनके लिए भी सामाजिक मर्यादा और नैतिक बन्धनों का कोई मूल्य नहीं है। सुन्दर ''घरौंदें'' की नायिका है।'' घरौंदे'' के जमींदार वृन्दावन सुन्दर को रखैल के रूप में अपने यहाँ रखते हैं। इनके अनैतिक सम्बन्ध से ही भगवती का जन्म होता है। रखैल नायिाकाओं का अन्तिम समय बड़ा ही दुखद होता है क्योंकि पुरूष उसकी जवानी के साथ ही अपना सम्बन्ध रखता है।

''घरौंदे'' की लीला भगवती से प्रेम करने लगती है। कालान्तर में वह भगवती की धार्मिक बातें सुनकर कराह उठती है और कहती है, ''भगवती आज मैं तुमसे सदा के लिए विदा लेती हूँ। आशा है, अब हम दोनों कभी एक–दूसरे से नहीं मिलेंगे।'' इसके पश्चात, वह भगवती से दूर हो जाती है। इन असफल नायिकाओं में नारी–सुलभ ईर्ष्या भी व्याप्त है। नीलू अपने प्रेम को लुटते देखकर अमानवीय कार्य करने के लिए तैयार हो जाती है। भगवती में जो भावुकता, त्याग और कार्यक्षमता की वृत्ति हैं, वह आदर्श की ओर उन्मुख है। यथार्थ के साथ–साथ इसमें आदर्श की ओर से भी कुछ सुन्दर संकेत हैं।

संदर्भ सूचना सूची

1. हिन्दी उपन्यास : डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह, प्रेमचन्दोत्तर काल (1937–1947 ई0), पृ0 75–77
2. हिन्दी उपन्यास : डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह, प्रेमचन्दोत्तर काल (1937–1947 ई0) पृ0 80–81
3. हिन्दी उपन्यास : डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह, पृ0 84–85
4. हिन्दी उपन्यास : डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह, पृ0 88
5. हिन्दी उपन्यास : डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह, पृ0 95–96
6. हिन्दी उपन्यास : डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह, पृ0 97–98
7. हिन्दी उपन्यास : डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह, पृ0 99
8. हिन्दी उपन्यास : डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह, पृ0 104–105
9. हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तर काल (1937–1947 ई0) डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह
10. हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तर काल (1937–1947 ई0) डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह
11. हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तर काल (1937–1947 ई0) डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह
12. हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तर काल (1937–1947 ई0) डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह
13. हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तर काल (1937–1947 ई0) डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह
14. हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तर काल (1937–1947 ई0) डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह
15. हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तर काल (1937–1947 ई0) डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह